



अपनी बातें

नवम्बर 2026 | अंक 3

चेयरमैन ग्रांट: बचपन की एक याद, एक लाख परिवारों के लिए सहयोग

जीवन की कुछ यादें हमेशा हमारे साथ रहती हैं। ये यादें हमारे सोचने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के नजरिए को आकार देती हैं। वेदांता के चेयरमैन श्री अनिल अग्रवाल के जीवन की ऐसी ही एक याद उनके बचपन से जुड़ी है। पटना में एक साधारण परिवार में पले-बढ़े श्री अग्रवाल ने अपने शुरुआती दिनों में घर के बढ़ते खर्चों के बीच अपनी मां को कई चुनौतियों का सामना करते देखा। उस समय की परिस्थितियों और उनकी मां की चिंताओं ने उनके मन पर गहरी छाप छोड़ी। बचपन की वही यादें उन्हें भावुक कर देती हैं। इसी संवेदनशीलता से

प्रेरित होकर उन्होंने चेयरमैन ग्रांट की पहल की, जिसके तहत पात्र कर्मचारियों को उनके वार्षिक वेतन का अतिरिक्त 10 प्रतिशत दिया जाएगा। इससे वेदांता परिवार के लगभग एक लाख कर्मचारियों को लाभ मिलने की उम्मीद है। यह केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि कर्मचारियों और उनके परिवारों के प्रति देखभाल, सम्मान और संवेदनशीलता का प्रतीक है। ग्रांट हमें याद दिलाती है कि नेतृत्व का अर्थ केवल व्यवसाय को आगे बढ़ाना और मूल्य सृजित करना नहीं है, बल्कि उन लोगों की जरूरतों को समझना भी है, जिनके योगदान से संगठन मजबूत बनता है।



सेक्टर सीईओ राजेश कुमार एवं सी. चंद्र ने किया संयंत्र भ्रमण

बालकोनगर। बालको ने वेदांता एल्यूमिनियम मेटल लिमिटेड के सीईओ श्री राजेश कुमार एवं वेदांता एल्यूमिनियम मेटल लिमिटेड, झारसुगुड़ा के सीईओ श्री सी. चंद्र का स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने बालको की परिचालन गतिविधियों, कर्मचारी कल्याण और सामुदायिक विकास से जुड़ी पहल का अवलोकन किया। दौरे की शुरुआत बालको टाउनशिप से हुई, जहां उन्होंने विभिन्न सुविधाओं का निरीक्षण किया और कर्मचारियों से संवाद किया। इस दौरान उन्होंने कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के कल्याण के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी ली। इसके बाद उन्होंने संयंत्र का दौरा किया और शॉप फ्लोर पर कार्यरत कर्मचारियों एवं फ्रंटलाइन टीमों से बातचीत की। उन्होंने प्रमुख परिचालन क्षेत्रों का अवलोकन करते



हुए सुरक्षा, कार्यक्षमता और प्रचालन उत्कृष्टता से जुड़े पहलुओं पर चर्चा की। यह दौरा बालको की विकास यात्रा में कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका,

नवाचार और निरंतर सुधार के प्रति प्रतिबद्धता को समझने तथा भविष्य की संभावनाओं पर विचारों के आदान-प्रदान का अवसर बना।

इस माह की तस्वीर



रावण दहन से पहले एक दुर्लभ झलक, एक ही मंच पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और रावण!

एक नज़र में

- » 4 किलोमीटर लंबी फ्लुइडाइजिंग कन्वेयर बेल्ट से एल्युमिना की आपूर्ति सुगम
- » एल्युमिनियम का सफर: प्रक्रिया, सटीकता और लोगों की भूमिका
- » जनरेटिव एआई से खरीद प्रक्रिया को अधिक स्मार्ट बना रहा बालको
- » सस्टेनेबिलिटी मंथ 2026
- » मानव संसाधन उत्कृष्टता के लिए बालको को महात्मा अवॉर्ड
- » आज ही करें अपने भविष्य में निवेश: एनपीएस

नवरात्रि और दशहरा उत्सव से सजा बालकोनगर

बालकोनगर में नवरात्रि और दशहरा के अवसर पर आस्था, संस्कृति और सामुदायिक एकता का सुंदर संगम देखने को मिला। एल्युमिनियम क्लब और सेक्टर-3 दुर्गा पूजा पंडाल में गरबा की रंगारंग प्रस्तुतियों ने उत्सव में चार चांद लगाए। वहीं, दशहरा मैदान में रामलीला और रावण दहन के आयोजन में 10,000 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। इन उत्सवों ने भारत की विविध संस्कृतियों की खूबसूरती और बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश दिया। साथ ही, विभिन्न पीढ़ियों के लोगों को एक साथ जोड़ते हुए आपसी मेलजोल बढ़ाया।



नेतृत्व संवाद

प्रिय बालको परिवार,

दीपावली के शुभ अवसर पर आप सभी को और आपके परिवारजनों को हार्दिक शुभकामनाएं। रेशनी का यह पर्व हमें याद दिलाता है कि प्रकाश केवल मनाने की चीज नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में भी खुशियां और उम्मीदें लाने का अवसर है। जब हम किसी की मदद करते हैं, उसके सपनों को पूरा करने में सहयोग देते हैं या किसी परिवार के जीवन में खुशियां लाते हैं, तब दीपावली का असली अर्थ साकार होता है। देश की प्रगति भी तभी सार्थक होती है, जब विकास के अवसर अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचें। दीपावली भगवान श्रीराम के वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटने की याद भी दिलाती है। यह अच्छाई की बुराई पर जीत का प्रतीक है। भगवान श्रीराम का जीवन हमें कर्तव्य, साहस, ईमानदारी और करुणा की सीख देता है। ये मूल्य हमें अपनी जिम्मेदारियां निभाने, सही का साथ देने और ऐसा वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करते हैं, जहां हर व्यक्ति को आगे बढ़ने का अवसर मिले। इसमें महिलाओं के लिए नए अवसर तैयार करना और कार्यस्थल व समुदाय में सभी की भागीदारी

सुनिश्चित करना भी शामिल है। बालको में हमारी जिम्मेदारी केवल एल्युमिनियम उत्पादन तक सीमित नहीं है। हम शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और महिला सशक्तीकरण के माध्यम से समुदाय को आगे बढ़ने के अवसर देने का प्रयास करते हैं। एल्युमिनियम भी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका उपयोग बुनियादी ढांचे, परिवहन, ऊर्जा और आधुनिक तकनीकों में होता है। हमारा प्रयास है कि व्यावसायिक प्रगति के साथ-साथ समुदाय का विकास भी निरंतर आगे बढ़े।

दीपावली मनाते समय हमें पर्यावरण और सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। कचरा कम करना, हवा की गुणवत्ता का ध्यान रखना और संसाधनों का जिम्मेदारी से उपयोग करना हमारी साझा जिम्मेदारी है। पटाखों का उपयोग भी सावधानी और दूसरों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर करना चाहिए। टिकाऊ भविष्य के लिए जरूरी है कि हम अपने कार्यस्थल के साथ-साथ रोजमर्रा के जीवन में भी सही विकल्प चुनें। भारत को मजबूत, समृद्ध और विकसित राष्ट्र बनाने में आज हमारे हर निर्णय की भूमिका है।

इस दीपावली, आइए अवसर, जिम्मेदारी और उम्मीद की रेशनी को आगे बढ़ाएं। मिलकर एक मजबूत बालको, सशक्त समुदाय और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य का निर्माण करें।

आप सभी और आपके परिवारों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

सादर,

राजेश सिंह
सीईओ एवं पूर्णकालिक निदेशक
बालको



बालको के चेहरे

मिलिए नित्या से
सीखने और आगे बढ़ने का सफर

हर पीढ़ी अपने साथ नई उम्मीदें और सपने लेकर कार्यस्थल पर आती है। आज के युवा पेशवरों के लिए सफलता का अर्थ केवल एक लक्ष्य हासिल करना नहीं है। यह नई चीजें सीखने, अलग-अलग क्षेत्रों को समझने और नए अवसरों के लिए तैयार रहने से भी जुड़ा है। नित्या की कहानी इसी सोच को दर्शाती है। कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में डिग्री पूरी करने के बाद नित्या ने बालको में अपने करियर की शुरुआत की। उनके लिए यह जीवन का एक नया दौर था। नई जिम्मेदारियाँ, कार्यस्थल का माहौल और पेशेवर जीवन की चुनौतियाँ उनके लिए सीखने के नए अवसर लेकर आईं। शुरुआत में कई चीजें समझना और उनके अनुरूप खुद को ढालना आसान नहीं था, लेकिन यहाँ उन्हें आगे बढ़ने और सीखने का अवसर मिला।

नित्या के लिए सबसे खास बात उनके आसपास के लोगों का सहयोग रहा। जब भी उन्हें किसी चुनौती का सामना करना पड़ा, उनके वरिष्ठों और सहकर्मियों ने उन्हें समझाया और सही दिशा दिखाई। इससे उन्हें काम को बेहतर ढंग से समझने और अपनी क्षमताओं पर भरोसा करने में मदद मिली। इस अनुभव ने उन्हें सिखाया कि विकास का मतलब पहली बार में हर काम सही करना नहीं, बल्कि सीखने की इच्छा बनाए रखना है। सीखने और नए अनुभव हासिल करने की यह आदत उनके जीवन में पहले से ही थी। कॉलेज के दिनों में पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने कक्षा से बाहर की गतिविधियों में भी रुचि ली। उन्हें मंच संचालन का विशेष शौक था। वे कॉलेज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, आयोजनों और संगीत समारोहों का संचालन करती थीं। धीरे-धीरे यह रुचि उनके आत्मविश्वास और संवाद कौशल को बेहतर बनाने का माध्यम बन गई।

आज पीछे मुड़कर देखने पर नित्या मानती हैं कि इन अनुभवों ने उन्हें अपनी झिझक दूर करने और नई चीजें आजमाने की सीख दी। चाहे मंच पर खड़े होकर लोगों से बात करना हो या कार्यस्थल पर नई जिम्मेदारी संभालना, दोनों ही स्थितियों में आगे बढ़ने के लिए पहल करना जरूरी है।

वर्तमान में नित्या बालको के ग्रीन एनोड प्लांट में कार्यरत हैं, जहाँ दस्तावेजों का रखरखाव और प्रक्रियाओं से जुड़े आंकड़ों का रिकॉर्ड रखना उनकी जिम्मेदारियों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अपने काम और सीखने की यात्रा के बारे में वे खुलकर कहती हैं, “आज मैं अपने कार्यक्षेत्र का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा समझती हूँ। बाकी 40 प्रतिशत मुझे हर दिन कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित करता है।” उनकी यही सोच उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इंजीनियर के रूप में अपना करियर मजबूत करने के साथ-साथ नित्या भविष्य में अपना व्यवसाय शुरू करने की संभावना को लेकर भी उत्साहित हैं। उन्हें उद्यमिता एक ऐसा अवसर लगती है, जहाँ वे नए विचारों पर काम कर सकती हैं, समस्याओं के समाधान खोज सकती हैं और अपने विचारों को वास्तविक रूप दे सकती हैं।

नित्या के लिए सफलता किसी एक उपलब्धि या पद तक सीमित नहीं है। उनके लिए इसका अर्थ है लगातार सीखना, नई क्षमताएं विकसित करना और अपने सहज दायरे से बाहर निकलकर अवसरों को अपनाना। बालको में नित्या जैसे युवा पेशेवर नई ऊर्जा, नए विचार और सीखने का उत्साह लेकर आ रहे हैं। उनके लिए यह सफर हर सवाल का जवाब आज ही जान लेने का नहीं, बल्कि कल मिलने वाली नई संभावनाओं के लिए तैयार रहने का है।

एल्युमिनियम का सफर: प्रक्रिया, सटीकता और लोगों की भूमिका

एल्युमिनियम का सफर एक लंबी और रोचक प्रक्रिया है। अयस्क से निकलकर घरों, उद्योगों और आधुनिक तकनीकों का हिस्सा बनने तक, यह धातु कई चरणों से गुजरती है। इस पूरी यात्रा में तकनीक, सटीकता और लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालको में एल्युमिनियम का उत्पादन एकीकृत विनिर्माण प्रणाली के तहत किया जाता है, जहाँ हर चरण अगले चरण की नींव तैयार करता है।

बॉक्साइट से होती है शुरुआत

एल्युमिनियम बनाने की प्रक्रिया बॉक्साइट से शुरू होती है। यह वह प्रमुख अयस्क है, जिससे एल्युमिनियम का उत्पादन किया जाता है।



एल्युमिनियम बनाने की प्रक्रिया बॉक्साइट से शुरू होती है। यह वह प्रमुख अयस्क है, जिससे एल्युमिनियम का उत्पादन किया जाता है। बालको में बॉक्साइट का खनन मशीनीकृत ओपनकास्ट तकनीक से किया जाता है। इसके बाद इसे रिफाइनरी में भेजा जाता है, जहाँ बेयर प्रक्रिया (Bayer Process) के माध्यम से बॉक्साइट से एल्युमिना तैयार किया जाता है। एल्युमिना, यानी एल्युमिनियम ऑक्साइड, आगे की प्रक्रिया में इस्तेमाल होने वाला प्रमुख कच्चा माल है। इस चरण में कच्चे माल की रासायनिक और भौतिक विशेषताओं की जांच की जाती है, ताकि उत्पादन की गुणवत्ता और निरंतरता बनी रहे।

एल्युमिना से पिघली हुई धातु तक

इसके बाद एल्युमिना पॉटलाइन तक पहुँचता है, जहाँ इलेक्ट्रोलिसिस की प्रक्रिया से इसे पिघले हुए एल्युमिनियम में बदला जाता है। बालको के पॉट रूम में यह महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। इस प्रक्रिया में कार्बन एनोड का भी अहम योगदान होता है। उत्पादन को सुरक्षित और सुचारु बनाए रखने के लिए इंजीनियर, ऑपरेटर, तकनीशियन और मेटेनेंस टीमों मिलकर काम करती हैं। वे प्रक्रियाओं की निगरानी करती हैं, उपकरणों की देखभाल करती हैं और उत्पादन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में योगदान देती हैं।



पिघली धातु से तैयार उत्पाद तक

पिघला हुआ एल्युमिनियम इसके बाद कास्ट हाउस पहुँचता है, जहाँ इसे विभिन्न उपयोगों के अनुरूप उत्पादों का आकार दिया जाता है। बालको के कास्ट हाउस में एल्युमिनियम इंगट, वायर रॉड, प्राइमरी फाउंड्री अलॉय और रोल्ड उत्पाद तैयार किए जाते हैं। इनमें कौडल, शीट, स्ट्रिप और प्लेट जैसे उत्पाद शामिल हैं।

यहाँ केवल धातु को आकार देना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि उसकी गुणवत्ता बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है। इसके लिए डीगैसिंग, फिल्ट्रेशन और आधुनिक कास्टिंग प्रणालियों जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य परियोजनाओं के लिए कंपनी को मिला राष्ट्रीय सम्मान



बालको को एसोचैम के चौथे हेल्थ एंड वेलेनेस एक्सीलेंस अवॉर्ड्स 2026 में स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में किए गए प्रयासों के लिए सम्मानित किया गया। इसमें प्रोजेक्ट आरोग्य, बालको मेडिकल सेंटर (बीएमसी) और मोबाइल हेल्थ चैन कार्यक्रम शामिल हैं। दिल्ली में आयोजित समारोह में नीति आयोग के सदस्य डॉ. एम. श्रीनिवास ने यह सम्मान प्रदान किया।

यह सम्मान ग्रामीण और आदिवासी समुदाय तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के बालको के प्रयासों को दर्शाता है। स्वास्थ्य जागरूकता, मोबाइल चिकित्सा सेवाओं और विशेष कैंसर उपचार के माध्यम से बालको जरूरतमंद लोगों तक बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने और उनके स्वास्थ्य में सुधार लाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है।

जब एल्युमिनियम दुनिया से जुड़ता है

तैयार होने के बाद एल्युमिनियम विभिन्न उद्योगों और जरूरतों का हिस्सा बनता है। इसका उपयोग इंफ्रास्ट्रक्चर, ऑटोमोबाइल, पैकेजिंग, एयरोस्पेस, घरेलू उपकरणों, आधुनिक तकनीकों और रक्षा क्षेत्र में किया जाता है। संयंत्र से बाहर जाने वाला हर उत्पाद अपने साथ उत्पादन के हर चरण में बरती गई गुणवत्ता और सटीकता लेकर जाता है।

हर बदलाव के पीछे लोगों की मेहनत

मशीनें उत्पादन को गति देती हैं, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया को सफल बनाने में लोगों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। हर चरण पर कर्मचारी प्रक्रियाओं की निगरानी करते हैं, आंकड़ों का विश्लेषण करते हैं, उपकरणों का रखरखाव करते हैं और गुणवत्ता की जांच करते हैं। बालको में तकनीक उत्पादन को व्यापक बनाती है, सटीकता गुणवत्ता में निरंतरता लाती है और लोगों की विशेषज्ञता इसे सही दिशा देती है। इस तरह एल्युमिनियम का हर उत्पाद केवल एक विनिर्माण प्रक्रिया का परिणाम नहीं, बल्कि संभावनाओं को उपयोगी रूप देने वाली एक पूरी यात्रा का प्रतीक है।

प्रोजेक्ट उन्नति को सर्वश्रेष्ठ
सीएसआर परियोजना
का सम्मान

बालको को ब्रांड होन्चोस द्वारा आयोजित ब्रांड इंडिया समिट 2026 में प्रोजेक्ट उन्नति के लिए 'वर्ष की सर्वश्रेष्ठ सीएसआर परियोजना' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह पहल महिला सशक्तीकरण और टिकाऊ आजीविका को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। प्रोजेक्ट उन्नति के माध्यम से बालको महिलाओं को कौशल विकास, उद्यमिता, वित्तीय साक्षरता और बाजार तक बेहतर पहुंच के अवसर प्रदान कर रहा है। इसका उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना और उनके लिए आजीविका के स्थायी अवसर तैयार करना है। यह सम्मान महिलाओं को सशक्त बनाने और आत्मनिर्भर समुदाय के निर्माण की दिशा में बालको के निरंतर प्रयासों को दर्शाता है।

टीबी उन्मूलन के प्रयासों के लिए बालको को सम्मान



बालको को प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत टीबी मरीजों की सहायता में निक्षेप मित्र के रूप में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। यह सम्मान कोरबा कलेक्ट्रेट में आयोजित जिला स्तरीय टीबी जागरूकता एवं सम्मान समारोह में प्रदान किया गया। इसके तहत बालको टीबी मरीजों को पोषण सहायता

किट उपलब्ध करा रहा है। साथ ही, प्रोजेक्ट आरोग्य के माध्यम से टीबी के प्रति जागरूकता बढ़ाने का कार्य भी किया जा रहा है। बालको के निरंतर सहयोग से चुहिया ग्राम पंचायत में पिछले एक वर्ष के दौरान टीबी का कोई नया मामला सामने नहीं आया। इस उपलब्धि के लिए ग्राम पंचायत को महात्मा गांधी

कांस्य स्मृति चिह्न और प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। यह सम्मान सामुदायिक स्वास्थ्य को मजबूत करने और भारत को टीबी मुक्त बनाने के राष्ट्रीय अभियान में बालको की निरंतर भागीदारी को दर्शाता है।

अर्पिता रॉय से बातचीत: उत्कृष्टता की बालको का सफर



बालको को 14वें मैन्युफैक्चरिंग टुडे कॉन्फ्रेंस एंड अवॉर्ड्स 2026 में 'एक्सीलेंस इन क्वालिटी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान गुणवत्ता व्यवस्था को मजबूत बनाने, प्रक्रियाओं की विश्वसनीयता बढ़ाने और निरंतर सुधार की संस्कृति विकसित करने के लिए किए गए प्रयासों का परिणाम है। बालको पोस्ट से बातचीत में गुणवत्ता एवं प्रक्रिया नियंत्रण प्रमुख अर्पिता रॉय ने बताया कि बालको की कार्यप्रणाली में गुणवत्ता की क्या भूमिका है और भविष्य में इसे किस तरह बेहतर बनाया जाएगा।

यह सम्मान बालको के लिए क्या मायने रखता है?

यह पुरस्कार हमारे लिए गर्व का विषय है। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि यह बालको की सभी टीमों की उस प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिसके साथ वे हर दिन

गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए काम करती हैं।

गुणवत्ता के क्षेत्र में बालको का मुख्य ध्यान किन बातों पर है?

हमारा उद्देश्य ग्राहकों को लगातार बेहतर और भरोसेमंद उत्पाद देना है। इसके लिए प्रक्रियाओं का सही तरीके से पालन, निर्धारित मानकों का अनुपालन, ग्राहक संतुष्टि और निरंतर सुधार जरूरी हैं। हम उत्पाद की गुणवत्ता, ग्राहकों की प्रतिक्रिया, खराब गुणवत्ता से जुड़ी लागत, आंतरिक अस्वीकृति, सुधारात्मक एवं निवारक कार्रवाइयों और ऑडिट के परिणामों की नियमित निगरानी करते हैं। इससे सुधार की संभावनाओं को पहचानने और बेहतर परिणाम हासिल करने में मदद मिलती है।

तकनीक गुणवत्ता प्रबंधन को किस तरह बेहतर बना रही है?

हाल ही में उन्हें आईबीएएस 2026 में एल्युमिनियम डाउनस्ट्रीम, मिश्रधातु और पुनर्चक्रण श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र प्रस्तुति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके शोध पत्र का विषय था, "एए6201 रॉड की मजबूती और गुणवत्ता में सुधार: मैग्नीशियम-सिलिकॉन का सही अनुपात और स्ट्रॉन्शियम की भूमिका।" इस शोध का उद्देश्य एल्युमिनियम मिश्रधातु की छड़ों की मजबूती और प्रदर्शन को बेहतर बनाना था। इससे उत्पाद की गुणवत्ता और निर्माण प्रक्रिया की दक्षता बढ़ाने में मदद मिल सकती है। यह सम्मान उनकी वर्षों की मेहनत और बालको में किए गए काम का परिणाम है। हर्षवर्धन का ध्यान हमेशा उत्पादन से जुड़ी चुनौतियों को समझने, काम में आने वाली बाधाओं को दूर करने, नए उत्पाद विकसित करने और मौजूदा उत्पादों को बेहतर बनाने पर रहा है। उनकी सीखने की इच्छा केवल कार्यस्थल तक सीमित नहीं है। वे उद्योग से जुड़े सम्मेलनों में अपने शोध को प्रस्तुत करते हैं, तकनीकी परियोजनाओं पर काम करते हैं और नए विचारों को समझने का प्रयास करते

तकनीक ने गुणवत्ता प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाया है। इस एसएपी क्यूएम, एलआईएमएस, डिजिटल डैशबोर्ड और वास्तविक समय में प्रक्रिया की निगरानी जैसे माध्यमों से हम तेजी से और बेहतर जानकारी के आधार पर निर्णय ले पाते हैं। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, पूर्वानुमान आधारित विश्लेषण और स्वचालन से गुणवत्ता व्यवस्था को और बेहतर बनाने की संभावनाएं हैं।

टीम की गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता को क्या खास बनाता है?

विभिन्न विभागों के बीच बेहतर तालमेल हमारी सबसे बड़ी ताकत है। टीमों ने डिजिटल तकनीक अपनाने, सुधार परियोजनाओं और प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम किया है। इस साझा प्रयास से अच्छे परिणाम मिले हैं और गुणवत्ता को हर कर्मचारी की जिम्मेदारी बनाने में मदद मिली है।

बालको की गुणवत्ता व्यवस्था का अगला लक्ष्य क्या है?

हम मौजूदा उपलब्धियों को आगे बढ़ाते हुए प्रक्रियाओं की क्षमता मजबूत करने, डिजिटल गुणवत्ता उपकरणों का विस्तार करने और विश्लेषण की क्षमता बढ़ाने पर ध्यान दे रहे हैं। साथ ही, शॉपफ्लोर पर गुणवत्ता के प्रति जिम्मेदारी की भावना को और मजबूत करना हमारा लक्ष्य है। बालको की विकास यात्रा में गुणवत्ता प्रचालन उत्कृष्टता और ग्राहकों के भरोसे का महत्वपूर्ण आधार बनी रहेगी।

People of BALCO



मिलिए आशिका सिंह से

हम अक्सर सोचते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए किसी बड़े अवसर या खास पल की जरूरत होती है। लेकिन असल में, सफलता रोज की छोटी-छोटी कोशिशों, मुश्किलों के बावजूद आगे बढ़ने और खुद पर भरोसा रखने से मिलती है। आशिका सिंह की कहानी भी इसी सोच को दर्शाती है। आज आशिका बालको के कास्ट हाउस-4 की बिलेट लाइन में एमआईएस इंचार्ज के रूप में कार्यरत हैं।

अपनी जिम्मेदारियों को आत्मविश्वास के साथ निभाते हुए उन्हें इस बात पर गर्व है कि उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से यह मुकाम हासिल किया है। आशिका हमेशा से मानती थीं कि शिक्षा उनके भविष्य को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हालांकि, उनके लिए आगे बढ़ने का रास्ता हमेशा आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने सीखने और नए अवसर तलाशने पर ध्यान बनाए रखा।

इसी लगन ने उन्हें कंप्यूटर ऑपरेटर एंड प्रोग्रामिंग असिस्टेंट (सीओपीए) का प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित किया, जिसने उनके करियर की नई राह खोली। बालको में उनकी यात्रा प्रशिक्षु के रूप में शुरू हुई। यह अनुभव उनके पेशेवर जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। यहां उन्हें केवल तकनीकी काम सीखने का अवसर ही नहीं मिला, बल्कि ऐसे लोगों का सहयोग भी मिला, जिन्होंने उनकी क्षमताओं को निखारने और आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद की। अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए आशिका कहती हैं, "टीम सच में चाहती थी कि मैं सीखूँ और आगे बढ़ूँ।"

लोगों ने धैर्य के साथ मुझे काम समझाया और लगातार बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित किया। "उनके लिए यह प्रशिक्षण केवल तकनीकी ज्ञान हासिल करने तक सीमित नहीं था। इस अनुभव ने उन्हें ऐसी कार्यसंस्कृति से परिचित कराया, जहां सीखने को प्रोत्साहित किया जाता है और एक-दूसरे की प्रगति में सहयोग दिया जाता है। इससे उनके भीतर आगे बढ़ने का विश्वास और मजबूत हुआ। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद आशिका कास्ट हाउस-4 से जुड़ीं। यहां वे लगातार अपने ज्ञान को बढ़ा रही हैं और नई जिम्मेदारियां संभाल रही हैं।

उनकी कार्यशैली आज भी वही है, जिज्ञासु बने रहना, नई चीजें सीखना और हर अवसर का पूरा उपयोग करना। इस सफर में उनकी मां का योगदान भी बेहद खास रहा है। आशिका अपनी मां को अपनी सबसे बड़ी ताकत मानती हैं। कठिन और अनिश्चित परिस्थितियों में भी उनकी मां ने उन्हें अपने लक्ष्य पर ध्यान बनाए रखने और खुद पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया। आज आशिका अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि अपनी स्वतंत्रता और आत्मविश्वास को मानती हैं।

उनके लिए यह जानना सबसे महत्वपूर्ण है कि उन्होंने मुश्किलों के बावजूद अपने सपनों का साथ नहीं छोड़ा। आशिका की कहानी बताती है कि सफलता किसी एक बड़ी उपलब्धि से नहीं मिलती। यह हर दिन आगे बढ़ने, मेहनत करते रहने और खुद पर विश्वास बनाए रखने से बनती है।

हर्षवर्धन दुबे: सीखने की लगन से राष्ट्रीय पहचान तक

कुछ उपलब्धियां किसी एक बड़ी सफलता से मिलती हैं, जबकि कुछ के पीछे वर्षों की मेहनत, जिज्ञासा और लगातार बेहतर करने की कोशिश होती है। हर्षवर्धन दुबे की कहानी भी ऐसी ही है।



4 किलोमीटर लंबी फ्लूइडाइजिंग कन्वेयर बेल्ट से एल्युमिना की आपूर्ति सुगम

एल्युमिना आपूर्ति में नवाचार की नई पहल बालको ने पॉटलाइन-3 तक एल्युमिना पहुंचाने के लिए भारत की पहली 4 किलोमीटर लंबी फ्लूइडाइजिंग बेल्ट कन्वेयर प्रणाली सफलतापूर्वक शुरू की है। इस आधुनिक प्रणाली से एल्युमिना का परिवहन अधिक आसान और प्रभावी हुआ है। इससे पॉटलाइन के सुचारू संचालन के लिए इस महत्वपूर्ण कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

नई प्रणाली से सामग्री के परिवहन के दौरान रुकावटों की आशंका कम हुई है, जिससे पॉटलाइन-3 का संचालन अधिक स्थिर और सुचारू बनाने में सहायता मिलती है। भारत में पहली बार लागू की गई यह तकनीक बालको की नवाचार, आधुनिक तकनीक और निरंतर सुधार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह पहल प्रचालन उत्कृष्टता की दिशा में बालको के प्रयासों को और मजबूत करती है।



मिथक बनाम तथ्य

मिथक	तथ्य
एल्युमिनियम को केवल एक बार ही रीसाइकिल किया जा सकता है।	एल्युमिनियम को उसके मूल गुणों को बनाए रखते हुए बार-बार रीसाइकिल किया जा सकता है।



क्या आप जानते हैं?

एल्युमिनियम की रीसाइक्लिंग में प्राथमिक एल्युमिनियम उत्पादन की तुलना में 95% तक कम ऊर्जा खर्च होती है।



स्मार्ट ट्रॉली प्रबंधन से बार-बार होने वाली खराबियों पर रोक



बालको के एनोड रॉडिंग शॉप में पी एंड पी कन्वेयर का सुचारु संचालन उत्पादन प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण है। यहां खराब ट्रॉलियों के कारण बार-बार होने वाली रुकावटों को रोकने के लिए आरएफआईडी आधारित स्वचालित ट्रैकिंग और डायवर्जन प्रणाली शुरू की गई है।

चुनौती

पहले खराब ट्रॉलियों की पहचान कर उन्हें मरम्मत क्षेत्र में भेजने के लिए मैनुअल टैगिंग और ट्रैकिंग की जाती थी। कई बार क्षतिग्रस्त ट्रॉलियां पहचान में नहीं आ पाती थीं और दोबारा कन्वेयर प्रणाली में पहुंच जाती थीं। इससे बार-बार खराबी आती थी और प्रचालन प्रभावित होता था।

समाधान

नई प्रणाली में आरएफआईडी टैग और कंट्रोलर खराब ट्रॉलियों की पहचान कर उन्हें अपने आप मरम्मत क्षेत्र की ओर भेजते हैं। एक विशेष मॉनिटरिंग स्क्रीन के माध्यम से खराब ट्रॉलियों की निगरानी की जाती है। मरम्मत की जरूरत होने पर चेतावनी लाइट और बजर संबंधित टीम को सूचना देते हैं।

यह प्रणाली कैसे काम करती है?

- एचएमआई में खराब ट्रॉली की पहचान की जाती है।
- स्टॉपर ए-180 पर आरएफआईडी ट्रॉली को पहचानता है।
- ट्रॉली स्वचालित रूप से मरम्मत क्षेत्र में भेजी जाती है।
- निरीक्षण स्टेशन पर चेतावनी लाइट और बजर सक्रिय होते हैं।
- मरम्मत के बाद एचएमआई में ट्रॉली की स्थिति रीसेट की जाती है।
- ट्रॉली को दोबारा प्रचालन में शामिल किया जाता है।

प्रमुख फायदे

- मैनुअल ट्रैकिंग की जरूरत कम होती है।
- खराब ट्रॉलियों की दोबारा प्रचालन में वापसी रुकती है।
- गलतियों की संभावना कम होती है।
- खरखाव और मरम्मत की योजना बेहतर बनती है।
- पी एंड एफ कन्वेयर में बार-बार होने वाली खराबियों को कम करने में मदद मिलती है।

स्मार्ट ट्रैकिंग,

समय पर मरम्मत और अधिक विश्वसनीय प्रचालन तकनीक के माध्यम से बेहतर कार्यप्रणाली की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम।

डिजिटल कंट्रोल टावर्स से बालको के प्रचालन को मिली नई गति



वेदांता एल्युमिनियम मेटल लिमिटेड की कंपनी बालको ने अपने प्रचालन को अधिक प्रभावी और तकनीक आधारित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। कंपनी ने कोयला लॉजिस्टिक्स, तैयार उत्पादों, राख प्रबंधन, आंतरिक वाहनों और अपशिष्ट प्रबंधन के लिए पांच कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित कंट्रोल टावर्स को एकीकृत किया है। यह व्यवस्था विभिन्न प्रचालन गतिविधियों को एक साझा डिजिटल मंच पर लाती है और बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है। इस डिजिटल व्यवस्था में जीपीएस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) आधारित वाहन ट्रैकिंग, एआई आधारित वीडियो टेलीमैटिक्स, जियो-फेंसिंग और रियल-टाइम डेटा विश्लेषण जैसी तकनीकों का उपयोग किया गया है। इससे महत्वपूर्ण लॉजिस्टिक्स गतिविधियों की शुरुआत से अंत तक निगरानी संभव होती है। एजेंटिक एआई की मदद से यह व्यवस्था केवल गतिविधियों पर नजर रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रचालन आंकड़ों का

विश्लेषण करने, संभावित समस्याओं की पहचान करने और समय पर कार्रवाई के सुझाव देने में भी सहायता करती है।

पांच कंट्रोल टावर्स, पांच महत्वपूर्ण भूमिकाएं

कोयला लॉजिस्टिक्स कंट्रोल टावर कोयले के परिवहन और उसकी आवाजाही की डिजिटल निगरानी करता है। इससे आपूर्ति श्रृंखला में समन्वय और पारदर्शिता बेहतर होती है। तैयार उत्पाद कंट्रोल टावर संयंत्र परिसर में तैयार उत्पादों की आवाजाही को व्यवस्थित करता है। डिजिटल डिलीवरी प्रमाण, निर्धारित मार्गों की निगरानी और यातायात प्रबंधन के माध्यम से उत्पादों की आवाजाही को अधिक सुचारु बनाने में मदद मिलती है। राख प्रबंधन कंट्रोल टावर राख की आवाजाही और उसके निपटान मार्गों पर नजर रखता है। इससे संसाधनों की निगरानी और पर्यावरणीय नियमों के अनुपालन को बेहतर बनाने में सहायता मिलती है। अपशिष्ट प्रबंधन कंट्रोल टावर

कचरे और अन्य अपशिष्ट पदार्थों की आवाजाही पर नजर रखता है। इससे वाहनों की गतिविधियों का रिकॉर्ड रखने और निर्धारित प्रक्रियाओं के पालन को सुनिश्चित करने में मदद मिलती है। आंतरिक वाहन कंट्रोल टावर संयंत्र परिसर में चलने वाले तकनीकी और उपयोगिता वाहनों की निगरानी करता है। इनमें मीडियम टैक्टिकल वाहन (एमटीवी), लाइट मीडियम टैक्टिकल वाहन (एलटीवी), फोर्कलिफ्ट, हाइड्रॉ, कैपर और बसें शामिल हैं।

एकीकृत डिजिटल व्यवस्था से बेहतर प्रबंधन

पांच कंट्रोल टावर्स मिलकर वाहनों, मार्गों और विभिन्न प्रचालन गतिविधियों से जुड़े आंकड़ों को एक साझा डिजिटल व्यवस्था में जोड़ते हैं। इससे संबंधित टीमों प्रक्रियाओं में होने वाले बदलावों को पहचान सकती हैं, प्रदर्शन का विश्लेषण कर सकती हैं और जरूरत के अनुसार तेजी से कदम उठा सकती हैं। यह पहल बालको की व्यापक डिजिटल बदलाव रणनीति का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य विनिर्माण और लॉजिस्टिक्स प्रक्रियाओं में तकनीक का बेहतर उपयोग करना है। कच्चे माल, तैयार उत्पादों, आंतरिक वाहनों और अपशिष्ट की आवाजाही पर बेहतर निगरानी से जवाबदेही, संसाधनों के उपयोग और आपूर्ति श्रृंखला की विश्वसनीयता को मजबूत करने में मदद मिलती है। एल्युमिनियम उद्योग में तकनीक और डिजिटल समाधानों का महत्व लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में बालको की यह पहल अधिक एकीकृत, जवाबदेह और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप प्रचालन व्यवस्था विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कल्पना कीजिए, अगर कास्टिंग लैंडल अपनी कहानी सुना पाता



वह केवल यह नहीं बताता कि उसने कितने टन पिघला हुआ एल्युमिनियम संभाला या कितनी बार काम किया। वह उस घिसावट की कहानी भी सुनाता, जिसे वह हर दिन चुपचाप सहता है।

वह तेज गर्मी, लंबे समय तक पिघली धातु को संभालने और अपनी अंदरूनी परत यानी रिफ्रेक्टरी लाइनिंग की अहमियत के बारे में बताता। यही परत सामान्य प्रचालन और संभावित जोखिम के बीच सुरक्षा प्रदान करती है। लैंडल शायद यह भी बताता कि उसकी खराबी अचानक नहीं आती। इसकी शुरुआत धीरे-धीरे होती है और कई बार बाहरी संकेत दिखाई देने से पहले ही अंदरूनी बदलाव शुरू हो जाते हैं।

शायद वह चाहता कि कोई उसकी स्थिति को समय रहते समझ ले, ताकि खराबी बढ़ने से पहले जरूरी कदम उठाए जा सकें।

पहले कास्टिंग लैंडल की स्थिति का आकलन निरीक्षण, अनुभव और दिखाई देने वाले संकेतों के आधार पर किया जाता था। विशेषज्ञ अपने अनुभव से घिसावट की पहचान करते और तय करते कि मरम्मत या रखरखाव कब जरूरी है। लेकिन कुछ शुरुआती संकेत अंदर ही छिपे रहते थे और कई बार समय रहते कार्रवाई करने का अवसर निकल जाता था।

अब बालको का कंटीन्यूअस टेम्परेचर मॉनिटरिंग सिस्टम इस स्थिति को बदल रहा है।

लैंडल की बाहरी सतह पर लगाए गए थर्मोकपल लगातार उसके तापमान की निगरानी करते हैं। इससे

लैंडल की स्थिति की वास्तविक समय में जानकारी मिलती है। तापमान में होने वाले छोटे बदलाव भी रिफ्रेक्टरी लाइनिंग के भीतर संभावित परिवर्तन का संकेत दे सकते हैं। इससे टीमों को शुरुआती स्तर पर समस्या पहचानने और समय पर सुधारात्मक कदम उठाने में मदद मिलती है। इस पहल का महत्व केवल तापमान मापने तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे मिलने वाली जानकारी के बेहतर उपयोग में भी है।

अब रखरखाव की योजना उपकरण की वास्तविक स्थिति के आधार पर बनाई जा सकती है। संभावित समस्याओं को गंभीर होने से पहले पहचाना जा सकता है। इससे रिफ्रेक्टरी लाइनिंग का उपयोगी जीवन बढ़ाने, प्रचालन में रुकावट कम करने और उपकरण की विश्वसनीयता मजबूत करने में मदद मिल सकती है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह प्रणाली बालको की सक्रिय सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करती है।

कई मायनों में यह तकनीक वही काम करती है, जिसकी अपेक्षा हर अच्छी सुरक्षा व्यवस्था से की जाती है—जो दिखाई नहीं देता, उसे भी पहचानने में मदद करना।

क्योंकि अगर कास्टिंग लैंडल अपनी बात कह पाता, तो वह समस्या स्पष्ट होने तक इंतजार नहीं करता। वह समय रहते संकेत देता, ताकि संभावित खराबी को रोका जा सके।

अब तकनीक हमें उन संकेतों को समय रहते समझने और उन पर कार्रवाई करने का अवसर देती है।



सितंबर में बालको के सस्टेनेबिलिटी मंथ 2026 ने कर्मचारियों, बिजनेस पार्टनर्स, परिवारों, विद्यार्थियों और समुदाय के लोगों को सीखने और पर्यावरण संरक्षण के लिए मिलकर काम करने का अवसर दिया। जलवायु परिवर्तन एवं जैव विविधता, कचरा एवं जल प्रबंधन, सुरक्षा तथा सामुदायिक विकास एवं पारिस्थितिकी संरक्षण जैसे चार विषयों पर आधारित इस पहल ने टिकाऊ जीवनशैली को व्यवहार में अपनाने का संदेश दिया।

प्रमुख उपलब्धियां

- 2,697 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- 800 से अधिक विद्यार्थियों ने सस्टेनेबिलिटी कार्निवल में हिस्सा लिया।
- 200 पौधे वाड़ी पौधरोपण गतिविधियों के तहत लगाए गए।
- 100 से अधिक लोगों ने हेल्थ कनेक्ट कार्यक्रम में भाग लिया।

जलवायु परिवर्तन एवं जैव विविधता



वाड़ी पौधरोपण अभियान



जलवायु परिवर्तन एवं जैव विविधता पर नुक्कड़ नाटक



पृथ्वी की सीमाओं एवं अर्थ ओवरशूट डे पर जागरूकता सत्र



सीड बॉल बनाने की गतिविधि

सीखने और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

अपशिष्ट एवं जल प्रबंधन



अपशिष्ट एवं जल प्रबंधन पर प्रशिक्षण



विभिन्न एसबीयू में 5S अभियान



मासिक धर्म से उत्पन्न अपशिष्ट के सुरक्षित एवं जिम्मेदार निपटान पर जागरूकता

जिम्मेदार उपभोग और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को बढ़ावा देना।

सुरक्षा



खतरों की पहचान एवं सीढ़ी सुरक्षा चुनौती



सुरक्षा नेतृत्व कार्यक्रम (सुरक्षा नेतृत्व)

सहभागिता और नेतृत्व के माध्यम से सुरक्षा संस्कृति को मजबूत बनाना

सामुदायिक विकास एवं पारिस्थितिकी पुनर्स्थापन



सस्टेनेबिलिटी कार्निवल



हेल्थ कनेक्ट कार्यक्रम



तालाब सौंदर्यीकरण अभियान

स्थिरता को लोगों, समुदाय और उनके कल्याण से जोड़ना।

सस्टेनेबिलिटी कार्निवल का भव्य समापन
6 स्कूलों के 800 से अधिक विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा

* फिल्म प्रदर्शन * ईएसजी चैलेंज * खतरों की पहचान संबंधी गतिविधि * कचरा पृथक्करण खेल * मिट्टी के बर्तन बनाने की कार्यशाला * सीड बॉल बनाने की गतिविधि * कोसा बुनाई का अनुभव * बागवानी एवं पौधों के संरक्षण पर जागरूकता * सामुदायिक प्रदर्शनियां

और इसी के साथ हुआ सस्टेनेबिलिटी मंथ 2026 का समापन!

चार सप्ताह तक चले सस्टेनेबिलिटी मंथ 2026 ने यह संदेश दिया कि छोटे-छोटे प्रयास, सामूहिक भागीदारी और साझा जिम्मेदारी मिलकर बड़ा एवं स्थायी बदलाव ला सकते हैं। कक्षाओं और समुदाय से लेकर कार्यस्थलों एवं सार्वजनिक स्थलों तक, इस आयोजन ने यह स्पष्ट किया कि स्थिरता तभी प्रभावी बनती है, जब जागरूकता के साथ ठोस कदम भी उठाए जाएं।

अपने भोजन में प्रोटीन क्यों शामिल करें?

प्रोटीन शरीर की मांसपेशियों को बनाने और उनकी मरम्मत करने में मदद करता है। यह लंबे समय तक पेट भरा रखने, रोग प्रतिरोधक क्षमता को सहारा देने और दिनभर ऊर्जा बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपने हर मुख्य भोजन में प्रोटीन का अच्छा स्रोत शामिल करने से संतुलित आहार लेने और बार-बार कुछ खाने की इच्छा कम करने में मदद मिल सकती है।

शाकाहारी प्रोटीन के स्रोत



पनीर



गाढ़ा दही



सोया चंक्स



छोले

मांसाहारी प्रोटीन के स्रोत



अंडे



चिकन ब्रेस्ट



मछली



झींगे

सुझाव: अपनी जरूरत, उम्र और शारीरिक गतिविधि के अनुसार हर मुख्य भोजन में लगभग 20-30 ग्राम प्रोटीन शामिल करने का लक्ष्य रखा जा सकता है।

रेसिपी कॉर्नर:



Banana-Peanut Butter Smoothie

केले की प्राकृतिक मिठास, दही और ओट्स से बनी यह मलाईदार लस्सी पौष्टिक और स्वादिष्ट विकल्प है।

प्रोटीन : 17-18 ग्राम | प्रति गिलास

मात्रा | 1 व्यक्ति के लिए तैयारी | 5 मिनट

सामग्री

- ¾ कप गाढ़ा दही
- ½ कप ठंडा दूध
- 1 पका केला
- 2 बड़े चम्मच ओट्स
- 1 बड़ा चम्मच पीनट बटर या 6 भीगे बादाम
- एक चुटकी इलायची पाउडर
- 1 छोटा चम्मच शहद या गुड़ पाउडर (वैकल्पिक)

बनाने की विधि

- ओट्स को दूध में 5 मिनट भिगोएं।
- सभी सामग्री को मिक्सर में डालें।
- 30-40 सेकंड तक अच्छी तरह पीसें।
- जरूरत के अनुसार थोड़ा दूध मिलाकर गाढ़ापन कम करें।
- कटे हुए मेवों से सजाकर ठंडा परोसें।

एक और विकल्प: व्यस्त सुबह में अतिरिक्त प्रोटीन के लिए दूध के साथ अपनी पसंद का प्रोटीन पाउडर भी मिला सकते हैं।



खुशियों की आवाज़

चेयरमैन ग्रांट मिलने पर बालको परिवार के सदस्यों के अनुभव और भावनाएं

“ इस पहल से सभी के चेहरों पर खुशी आई है। कार्यस्थल पर हर तरफ उत्साह और आभार की बातें हो रही हैं। वेदांता परिवार का हिस्सा होना गर्व की बात है। यह गर्व केवल हमारी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि इस बात से भी जुड़ा है कि यहां लोगों को कितना महत्व दिया जाता है। चेयरमैन की यह पहल एक बार फिर दिखाती है कि यह संगठन अपने लोगों के प्रति कितना संवेदनशील है। ”

जयप्रकाश यादव
इंटक, महासचिव

“ इस पहल ने सभी के बीच खुशी और उत्साह का माहौल बनाया है। कार्यस्थल पर हर कोई इस कदम की सराहना कर रहा है। वेदांता से जुड़ना गर्व की बात है, क्योंकि यहां संगठन की उपलब्धियों के साथ-साथ अपने लोगों का भी ध्यान रखा जाता है। चेयरमैन की इस सोच और पहल ने एक बार फिर यह साबित किया है कि वेदांता अपने कर्मचारियों को कितना महत्व देता है। ”

रमेश जांगिड़
इंटक, कोषाध्यक्ष

“ यह पहल हम सभी के लिए अपार खुशी और अपनेपन का एहसास लेकर आई है। आज हमें गर्व है कि हम केवल वेदांता में काम करने वाले कर्मचारी नहीं, बल्कि इस बड़े परिवार का अभिन्न हिस्सा हैं। कुछ खुशियां शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। हमारे परिवारों के चेहरों पर मुस्कान लाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। ”

श्रुति आदित्य
श्री कृष्णा इंजीनियरिंग, रोल्ड प्रोडक्ट्स, बालको

“ मैं 12 वर्षों से अधिक समय से बालको के साथ जुड़ी हूं और पहली बार इस तरह की पहल देख रही हूं। यह घोषणा मेरे और मेरे परिवार के लिए एक सुखद आश्चर्य थी। हम पहले से ही सोच रहे हैं कि इस राशि का उपयोग परिवार के साथ कुछ खास पल बिताने के लिए कैसे किया जाए। पूरे प्लॉट में उत्साह का माहौल है और सहकर्मियों में भी खुशी व आभार की भावना साफ दिखाई दे रही है। इस सराहनीय पहल के लिए मैं हमारे चेयरमैन श्री अनिल अग्रवाल का दिल से धन्यवाद करती हूं। ”

सोनम सोनी
एलआईपीएल, वरिष्ठ सहायक

आज ही करें अपने भविष्य में निवेश: एनपीएस

यदि आप एनपीएस पर आयोजित जागरूकता सत्र में शामिल नहीं हो पाए, तो यहां जानिए इस योजना से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें।

राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) सरकार समर्थित सेवानिवृत्ति बचत योजना है, जो नियमित निवेश के माध्यम से भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा तैयार करने में मदद करती है। नौकरी बदलने, दूसरे शहर जाने या नया नियोक्ता चुनने पर भी आपका एनपीएस खाता आपके साथ बना रहता है। ऑनलाइन सुविधाओं और पेशेवर फंड प्रबंधन के साथ यह सेवानिवृत्ति के बाद की जरूरतों के लिए बचत करने का एक व्यवस्थित विकल्प है।



कौन खोल सकता है खाता?

18 से 85 वर्ष की आयु के भारतीय नागरिक, निवासी और अनिवासी भारतीय (एनआरआई), लागू नियमों के अनुसार एनपीएस खाता खोल सकते हैं।

एनपीएस के प्रमुख लाभ

- कर बचत के अवसर:** एनपीएस में नियोक्ता के योगदान पर आयकर अधिनियम की धारा 80सीसीडी(2) के तहत निर्धारित शर्तों के अनुसार कर कटौती मिल सकती है। यह धारा 80C के अंतर्गत उपलब्ध कटौतियों से अलग है। योगदान, निवेश की अवधि और निकासी पर लागू कर नियम अलग-अलग हो सकते हैं।
- सेवानिवृत्ति के लिए बचत:** नियमित योगदान से सेवानिवृत्ति के लिए एक बड़ा कोष तैयार करने और बाद में पेंशन के माध्यम से आय पाने में मदद मिल सकती है।
- जल्दी शुरूआत, बेहतर अवसर:** कम उम्र में निवेश शुरू करने से चक्रवृद्धि वृद्धि का लाभ लेने के लिए अधिक समय मिलता है, जिससे लंबे समय में बचत बढ़ सकती है।
- नौकरी और शहर बदलने पर भी सुविधा:** आपका स्थायी सेवानिवृत्ति खाता नंबर (पीआरएएन) नौकरी, नियोक्ता या शहर बदलने पर भी वही रहता है। इससे निवेश की निरंतरता बनी रहती है।
- कम लागत वाला निवेश:** एनपीएस में फंड प्रबंधन की लागत अपेक्षाकृत कम है, जिससे निवेश का अधिक हिस्सा निवेशित रह सकता है।
- निवेश में विकल्प और लचीलापन:** आप अपनी जोखिम लेने की क्षमता के अनुसार इक्विटी, सरकारी प्रतिभूतियों और कॉर्पोरेट बॉन्ड में निवेश चुन सकते हैं। नियमानुसार फंड मैनेजर और निवेश आवंटन में बदलाव भी किया जा सकता है।
- डिजिटल सुविधा और पारदर्शिता:** खाता खोलने, निवेश करने और खाते की जानकारी देखने जैसी सुविधाएं ऑनलाइन उपलब्ध हैं। एनपीएस का संचालन पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) की निगरानी में होता है।
- निकासी की सुविधा:** एनपीएस दीर्घकालीन सेवानिवृत्ति निवेश के लिए बनाया गया है। इसमें निकासी और लॉक-इन के नियम लागू होते हैं। बच्चों की उच्च शिक्षा या विवाह, घर खरीदने अथवा गंभीर बीमारी के उपचार जैसी निर्धारित जरूरतों के लिए नियमानुसार आंशिक निकासी संभव हो सकती है।

एनपीएस में निवेश कैसे करें?

आप ई-एनपीएस पोर्टल या अधिकृत बैंकों के माध्यम से खाता खोल सकते हैं। इसके बाद अपनी सुविधा के अनुसार ऑनलाइन या ऑफलाइन योगदान कर सकते हैं। आज की छोटी बचत, कल की आर्थिक सुरक्षा। अपने भविष्य की योजना बनाएं और नियमित बचत की आदत अपनाएं।

बदल रही है, बालकोनगर की तस्वीर



बालकोनगर की सुबह हो या शाम, पेड़ों से घिरे पार्कों में टहलते लोग, स्कूल जाते बच्चे, कॉफी पर मिलते परिवार और हरियाली के बीच बिताए जाने वाले सुकून के पल यहां की बदलती जीवनशैली की झलक पेश करते हैं। औद्योगिक गतिविधियों के लिए पहचाने जाने वाले बालकोनगर में अब जीवन को और बेहतर बनाने के लिए भी कई बदलाव हो रहे हैं।

समय के साथ बालको टाउनशिप केवल कार्यस्थल के आसपास बसी एक कॉलोनी नहीं, बल्कि एक जीवंत समुदाय के रूप में विकसित हुई है। नेहरू उद्यान, बालको फॉरेस्ट वॉकवे, स्मृति उद्यान और ज़ुबिली पार्क जैसे हरित स्थल लोगों के मिलने-जुलने और समय बिताने के लोकप्रिय स्थान बन गए हैं। वहीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल, बालको टाउनशिप स्कूल, एमजीएम स्कूल और बाल सदन बच्चों की शिक्षा और विकास में योगदान दे रहे हैं।

125 बिस्तरों वाला बालको अस्पताल कर्मचारियों और आसपास के समुदायके लिए महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सुविधा है। इसके साथ ही, कचरा प्रबंधन से जुड़े प्रयास स्वच्छ और बेहतर वातावरण बनाने में मदद कर रहे हैं।

टाउनशिप में सामुदायिक सुविधाओं को भी नया रूप दिया जा रहा है। नवीनीकृत मंगल भवन, नया इंडियन कॉफी हाउस, ब्लैक मैज और आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित अंबेडकर स्टेडियम लोगों को मनोरंजन, खेल और आपसी मेलजोल के नए अवसर दे रहे हैं। वहीं, वरदान अपार्टमेंट और जीईटी हॉस्टल जैसी आवासीय सुविधाएं युवा कर्मचारियों को आरामदायक और सहयोगपूर्ण वातावरण प्रदान कर रही हैं।

सड़कों के सुधार और बुनियादी ढांचे के विकास से भी आवागमन और दैनिक जीवन को सुविधाजनक बनाने में मदद मिल रही है।

आज किसी टाउनशिप की पहचान केवल उसकी औद्योगिक गतिविधियों से नहीं, बल्कि वहां रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता से भी होती है। बालकोनगर में हरियाली, शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल और सामुदायिक सुविधाओं के विकास के प्रयास इसी सोच को दर्शाते हैं। यहां हो रहे बदलाव एक ऐसे भविष्य की दिशा में कदम हैं, जहां विकास का अर्थ केवल उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि लोगों के लिए बेहतर जीवन और मजबूत समुदाय तैयार करना भी है।

सम्मान दिवस योगदान को पहचान, प्रयासों को सम्मान



बालको ने सम्मान दिवस के अवसर पर कर्मचारियों और बिजनेस पार्टनर्स के योगदान को सराहा, जिनके प्रयासों से संगठन में सकारात्मक बदलाव आए हैं। इस पहल के तहत टाउनशिप विकास, संचार व्यवस्था में सुधार, सामुदायिक पहल, तकनीक के उपयोग और नवाचार जैसे क्षेत्रों में योगदान देने वाले लोगों को सम्मानित किया गया। यह आयोजन उपलब्धियों के पीछे काम करने वाले लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर बना। सम्मान दिवस के माध्यम से बालको ऐसी कार्यसंस्कृति को बढ़ावा दे रहा है, जहां अच्छे काम की पहचान होती है और लोगों को अपने-अपने क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिलती है।

बालको के बेहतर कार्यसंस्कृति एवं मानव संसाधन पर सीएचआरओ प्रज्ञा पांडे के विचार

प्रज्ञा पांडे, डिप्टी सीएचआरओ, वेदांता एल्युमिनियम मेटल लिमिटेड एवं सीएचआरओ, बालको से बातचीत



बालको को मानव संसाधन उत्कृष्टता के लिए महात्मा अवॉर्ड 2026 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान ऐसे समावेशी और भविष्य के लिए तैयार कार्यस्थल के निर्माण के प्रति बालको की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जहां कर्मचारी सीख सकें, आगे बढ़ सकें और अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग कर सकें।

यह पुरस्कार बालको के लिए क्या मायने रखता है?

यह पुरस्कार कर्मचारियों को प्राथमिकता देने वाली बालको की सोच की पहचान है। यह कर्मचारी कल्याण, नेतृत्व विकास, विविधता एवं समावेश, डिजिटल बदलाव और कर्मचारी सहभागिता के लिए किए गए हमारे प्रयासों को मान्यता देता है।

किन पहलों ने इस सम्मान को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

पयूचर लीडर्स, इमर्जिंग लीडर्स, महिला नेतृत्व विकास, रिवर्स मेंटरशिप और उत्तराधिकार नियोजन जैसे कार्यक्रमों ने भविष्य के नेतृत्व के लिए प्रतिभाशाली कर्मचारियों को तैयार करने में मदद की है।

इसके साथ ही, कर्मचारी कल्याण कार्यक्रमों, योर दोस्तदोस्त के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य सहायता, स्वास्थ्य अभियान, सम्मान कार्यक्रमों, टाउनहॉल और कर्मचारियों की राय जानने की पहलों ने संगठन में सहभागिता को मजबूत किया है।

डार्विनबॉक्स एचआरएमएस, अलाइसा के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित इंटरव्यू, डिजिटल लर्निंग और तकनीक आधारित कर्मचारी सुविधाओं ने मानव संसाधन सेवाओं को अधिक सरल, सुलभ और कर्मचारी-केंद्रित बनाया है।

कर्मचारी विकास और कल्याण को प्राथमिकता कैसे दी जाती है?

हम कर्मचारी की पूरी यात्रा को ध्यान में रखकर काम करते हैं। सर्वेक्षण, समूह चर्चा, टाउनहॉल और सीधे संवाद के माध्यम से उनकी बदलती जरूरतों को समझते हैं। सीखने के व्यवस्थित अवसर, नेतृत्व विकास कार्यक्रम और विभिन्न विभागों में काम करने के अनुभव से कर्मचारियों को आगे बढ़ने में मदद मिलती है।

इसके साथ ही, शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, परामर्श सहायता और परिवार के अनुकूल नीतियों पर भी ध्यान दिया जाता है, ताकि कर्मचारी बेहतर प्रदर्शन कर सकें और अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें।

हाल के वर्षों में बालको की कार्यसंस्कृति में कौन-से महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं?

हमने प्रचालन और नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने, समावेशी नीतियां लागू करने और मानव संसाधन सेवाओं को डिजिटल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इन प्रयासों से कार्यस्थल पर समान अवसर, बेहतर सहभागिता और सीखने की संस्कृति को बढ़ावा मिला है।

आगे की क्या योजनाएं हैं?

हम कर्मचारियों की क्षमताएं विकसित करने, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डिजिटल तकनीक के माध्यम से उनके अनुभव को बेहतर बनाने तथा उनके कल्याण पर ध्यान देने के लिए निरंतर काम करेंगे। साथ ही, विविधता, समान अवसर, समावेश और अपनत्व की भावना को बढ़ावा देना हमारी प्राथमिकता रहेगी।

प्रज्ञा पांडे का संदेश

“बालको में हम ऐसा कार्यस्थल बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जहां हर व्यक्ति आगे बढ़ सके, अपनी क्षमताओं को पहचान सके और उत्कृष्टता के साझा लक्ष्य में योगदान दे सके।”

श्यामा कुमारी यादव: दृढ़ संकल्प से अवसर तक



श्यामा कुमारी यादव के लिए सिलाई केवल एक हुनर नहीं, बल्कि उनका जुनून है। बचपन से पोलियो के प्रभाव के कारण उन्हें चलने-फिरने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने इन चुनौतियों को कभी अपनी पहचान या भविष्य तय नहीं करने दिया। उन्होंने अपनी क्षमताओं पर भरोसा किया और अपने हुनर को आत्मनिर्भरता का माध्यम बनाने का संकल्प लिया। श्यामा को बचपन से ही सिलाई का शौक था। बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण और उचित साधनों के भी वह सच्ची काटने वाले कटर से कपड़े काटतीं और हाथ से सिलाई करती थीं। एक दिन उनके पिता ने देखा कि उन्होंने अपने हुनर से खुद ही एक सुंदर पोशाक तैयार की है। बेटी की प्रतिभा और लगन से प्रभावित होकर उन्होंने उधार लेकर पैरों से चलने वाली सिलाई मशीन खरीदी। श्यामा के लिए यह सपना सच होने जैसा था। लेकिन उनकी खुशी जल्द ही एक नई

चुनौती में बदल गई। शारीरिक स्थिति के कारण उनके लिए मशीन का पैडल चलाना मुश्किल था। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। बेटी की परेशानी को समझते हुए उनके पिता ने हाथ से चलने वाली सिलाई मशीन की व्यवस्था की। इससे श्यामा को अपने पसंदीदा काम को आगे बढ़ाने का अवसर मिला। लगातार अभ्यास और मेहनत से उन्होंने अपने हुनर को निखारा। धीरे-धीरे उनके काम की गुणवत्ता की पहचान बनने लगी और आसपास के लोगों से कपड़े सिलने के ऑर्डर मिलने लगे। वह कपड़ों के साथ गहनों के कवर और पारंपरिक रजाइयां भी सिलने लगीं। घर की जिम्मेदारियां निभाते हुए उन्होंने अपने शौक को आजीविका का साधन बना लिया। जैसे-जैसे काम बढ़ा, चुनौतियां भी बढ़ने लगीं। हाथ से चलने वाली मशीन पर लंबे समय तक काम करने से वह थक जाती थीं। उनके पास हुनर और ग्राहकों की कमी

नहीं थी, लेकिन काम पूरा करने में अधिक समय लगने के कारण वह ज्यादा ऑर्डर नहीं ले पाती थीं। इससे उनकी आमदनी बढ़ाने की संभावनाएं भी सीमित थीं। उनके जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव तब आया, जब वह बालको की प्रोजेक्ट उन्नति से जुड़ीं। इस पहल के तहत उन्हें मोटर से चलने वाली सिलाई मशीन मिली। इससे शारीरिक मेहनत कम हुई, काम की गति बढ़ी और वह पहले की तुलना में कम समय में अधिक ऑर्डर पूरे करने लगीं। श्यामा बताती हैं, “हाथ से चलने वाली मशीन पर काम करते समय सबसे बड़ी चुनौती गति की थी। मोटर वाली मशीन से अब सिलाई करना काफी आसान हो गया है। पहले जितने समय में मैं एक ब्लाउज सिल पाती थी, अब उसी समय में दो ब्लाउज आसानी से सिल लेती हूँ।” यह बदलाव केवल काम की गति तक सीमित नहीं था। इससे श्यामा का आत्मविश्वास बढ़ा। वह अधिक ग्राहकों तक पहुंच सकीं और अपनी आमदनी को मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ीं। वर्षों से शारीरिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रही श्यामा के लिए यह सहयोग अपनी क्षमताओं को नए अवसरों में बदलने का माध्यम बना। इस पूरे सफर में उनके माता-पिता ने हमेशा उनका हौसला बढ़ाया। आज उन्हें गर्व है कि श्यामा परिवार की आमदनी में योगदान दे रही हैं और अपने हुनर के दम पर आगे बढ़ रही हैं। दूसरों के लिए श्यामा का संदेश सरल, लेकिन प्रेरणादायक है। वह कहती हैं, “किसी भी कठिनाई को अपने रास्ते की रुकावट न बनने दें। अगर आप सीखने और लगातार कोशिश करने के लिए तैयार हैं, तो आगे बढ़ सकते हैं। खुद पर भरोसा रखें और प्रयास करते रहें।” श्यामा की कहानी बताती है कि जब दृढ़ संकल्प को सही सहयोग मिलता है, तो चुनौतियां भी सफलता की सीढ़ी बन सकती हैं।

कुसुम बेक: गृहिणी से सामुदायिक नेतृत्व तक



कई वर्षों तक कुसुम बेक का जीवन घर-परिवार की जिम्मेदारियां निभाने तक सीमित रहा। उनके मन में अपना करियर बनाने का सपना था। उन्होंने शिक्षक भर्ती परीक्षाएं भी दीं, लेकिन कुछ अंकों से पीछे रह जाने के कारण उनका यह सपना धीरे-धीरे अधूरा रह गया। समय के साथ उन्होंने घर की जिम्मेदारियों को ही अपनी दिनचर्या बना लिया। उन्हें अंदाजा नहीं था कि एक दिन ऐसा अवसर मिलेगा, जो उन्हें अपनी अलग पहचान बनाने की राह दिखाएगा। वर्ष 2021 में उनकी एक पड़ोसी के माध्यम से बालको की प्रोजेक्ट उन्नति के बारे में जानकारी मिली। इसके बारे में जानने

की उत्सुकता में वह केंद्र पहुंचीं। वहां उन्होंने महिलाओं को नए कौशल सीखते, हस्तनिर्मित उत्पाद बनाते और अपने काम के जरिए आत्मविश्वास बढ़ाते देखा। यह अनुभव उनके लिए खास था। उनके मन में भी अपने सपनों को पूरा करने और अपनी अलग पहचान बनाने की इच्छा फिर से जाग उठी। कुसुम प्रोजेक्ट उन्नति की डेकोराट्री इकाई से जुड़ीं और हस्तशिल्प तथा सजावटी वस्तुएं बनाने का प्रशिक्षण लेने लगीं। धीरे-धीरे उन्होंने साधारण सामग्री से घर की सजावट के लिए सुंदर हस्तनिर्मित उत्पाद बनाना सीखा। प्रशिक्षण कार्यक्रमों और झारसुगुड़ा, कोंडागांव तथा राजनांदगांव जैसे स्थानों के भ्रमण से उन्हें नई तकनीकों और काम करने के तरीकों को समझने का अवसर मिला। अपने अनुभव साझा करते हुए कुसुम कहती हैं, “प्रशिक्षण और दूसरे स्थानों के भ्रमण से मुझे नई तकनीकें सीखने का मौका मिला। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और मैं लोगों से बातचीत करने तथा करियर में नए अवसर तलाशने के लिए प्रेरित हुई।” इस सफर ने उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया। अब वह अपने निजी खर्च खुद उठा सकती हैं। उनके लिए यह केवल अपनी कमाई तक सीमित बदलाव नहीं था, बल्कि खुद पर भरोसा करने और अपने फैसले लेने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इस बदलाव में उनके परिवार का सहयोग भी अहम रहा। परिवार ने उनकी इच्छाओं को समझा, उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया और

यह सुनिश्चित किया कि घर की जिम्मेदारियां उनके सपनों के रास्ते में बाधा न बनें। कुसुम बताती हैं, “मेरे परिवार को मेरे काम पर गर्व है। मैं जो भी करना चाहती हूँ, उसमें वे मेरा साथ देते हैं।” समय के साथ कुसुम का आत्मविश्वास बढ़ा और समाज में उनकी भूमिका भी मजबूत हुई। आज वह एक स्वयं सहायता समूह की सचिव के रूप में काम कर रही हैं। इस जिम्मेदारी के जरिए वह दूसरी महिलाओं को भी आगे बढ़ने, नए कौशल सीखने और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। अपने बदलाव को याद करते हुए कुसुम कहती हैं, “पहले मैं बहुत कम घर से बाहर निकलती थी। उन्नति से जुड़ने के बाद नए लोगों से मिलना, नई चीजें सीखना, अलग-अलग जगहों पर जाना और समुदाय के साथ बातचीत करना शुरू किया। इससे मेरे लिए एक नई दुनिया के दरवाजे खुल गए।” आज कुसुम आत्मविश्वास के साथ अपना काम संभालती हैं, अपना वाहन चलाती हैं, परिवार की आय में योगदान देती हैं और समुदाय में नेतृत्व की भूमिका निभाती हैं। उनकी कहानी बताती है कि सही अवसर और पहला कदम उठाने का साहस जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है। अन्य महिलाओं के लिए उनका संदेश है, “घर से बाहर निकलकर कुछ नया सीखने में संकोच न करें। जब आप आत्मनिर्भर बनती हैं, तो आपका आत्मविश्वास बढ़ता है और आपको अपनी अलग पहचान बनाने का अवसर मिलता है।”

पोषण माह: जागरूकता से स्वस्थ जीवन तक

पोषण माह का समापन, लेकिन सीख का सिलसिला जारी पोषण माह के समापन के साथ प्रतिभागियों ने पूरे महीने के दौरान मिली सीख, अनुभवों और उपयोगी जानकारी को साझा किया। इन सत्रों ने परिवारों को बच्चों के पोषण के प्रति जागरूक किया और रोजमर्रा के भोजन में छोटे-छोटे बदलावों के महत्व को समझाया।

“इन सत्रों से हमें बच्चों के पोषण के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला। मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि घर में आसानी से उपलब्ध चीजों से बच्चों के लिए पौष्टिक और संतुलित भोजन तैयार किया जा सकता है। हमने बच्चों की वृद्धि और पाचन में मदद करने वाले खाद्य पदार्थों के बारे में भी जाना, जिन्हें रोज के भोजन में शामिल करना आसान है।”

चंद्रकांता महिलाने, सतनाम नगर



“पोषण माह के दौरान आयोजित गतिविधियों में मेरे बच्चे ने बहुत आनंद लिया और मुझे भी इनमें शामिल होकर अच्छा लगा। सत्रों में बनाए गए पौष्टिक लड्डू स्वादिष्ट होने के साथ सेहतमंद भी थे। इस कार्यक्रम

ने हमें सरल और रोचक तरीके से अच्छे पोषण का महत्व समझाया।”

सरिता भारद्वाज, सतनाम नगर

कोसा सिल्क से आत्मनिर्भरता की नई राह



बालको की कोसा सिल्क प्रोत्साहन परियोजना महिलाओं को पारंपरिक बुनाई कौशल के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने और आगे बढ़ने के अवसर दे रही है। इस पहल के तहत 30 से अधिक महिलाएं सूती कपड़े की बुनाई का व्यावहारिक प्रशिक्षण ले रही हैं, जबकि 20 से अधिक महिलाएं कोसा सिल्क की विशेष बुनाई तकनीकें सीख रही हैं।

यह परियोजना केवल एक पारंपरिक कला सीखने तक सीमित नहीं है, बल्कि महिलाओं को आजीविका के स्थायी अवसरों से जोड़ने और क्षेत्र की समृद्ध बुनाई परंपरा को सहेजने का प्रयास भी है। प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाएं ऐसे कौशल विकसित कर रही हैं, जिनसे वे अपनी आय बढ़ा सकें और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बन सकें।

परियोजना के अगले चरण में महिलाओं को हथकरघे उपलब्ध कराने और उनके उत्पादों को बाजार से जोड़ने की योजना है। इससे वे अपने हुनर को आय के स्थायी साधन में बदल सकेंगी और अपने उत्पादों को व्यापक पहचान दिला सकेंगी। यह पहल पारंपरिक कला को आगे बढ़ाने के साथ महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता की नई राह तैयार कर रही है।

महिलाओं को वित्तीय और डिजिटल कौशल से सशक्त बना रहा बालको



बालको अपनी महिला सशक्तीकरण पहल प्रोजेक्ट उन्नति के माध्यम से आसपास के समुदाय की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम कर रहा है। इस परियोजना के तहत महिलाएं हस्तशिल्प, रेस्तरां प्रबंधन और अन्य आजीविका गतिविधियों से जुड़कर अपने कौशल को निखार रही हैं। साथ ही, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से सामूहिक प्रयासों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

महिलाओं को डिजिटल दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलने में मदद करने के लिए बालको ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के 197 स्वयं सहायता समूहों की करीब 400 महिलाओं के लिए वित्तीय एवं डिजिटल साक्षरता के 10 सत्र आयोजित किए।

इन सत्रों में वित्तीय प्रबंधन, डिजिटल भुगतान, रिकॉर्ड रखने, डिजिटल माध्यमों के सुरक्षित उपयोग और ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचने जैसे रोजमर्रा के जरूरी विषयों पर जानकारी दी गई। स्वयं सहायता समूहों के संचालन से जुड़े पांच प्रमुख सिद्धांतों यानी एसएचजी पंचसूत्र पर भी चर्चा की गई।

प्रशिक्षण को उपयोगी और रोचक बनाने के लिए व्याख्यान, समूह चर्चा, केस स्टडी, ऑडियो-वीडियो सामग्री, खेल और सामूहिक गतिविधियों का सहारा लिया गया। इससे महिलाओं को डिजिटल लेन-देन समझने और अपने वित्त का बेहतर प्रबंधन करने में मदद मिली।

यह पहल महिलाओं को सोच-समझकर वित्तीय निर्णय लेने, अपने समूहों का संचालन अधिक प्रभावी ढंग से करने और आय बढ़ाने के नए अवसर तलाशने के लिए तैयार कर रही है। वित्तीय और डिजिटल कौशल को मजबूत करके बालको महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामुदायिक विकास को बढ़ावा दे रहा है।



हमारी विरासत की नींव - 1976
बालको की यात्रा सोडरबर्ग तकनीक से शुरू हुई, जिसने दशकों तक एल्युमिनियम उत्पादन की मजबूत नींव रखी।



आधुनिक विनिर्माण की ओर - 2026
उन्नत गामी तकनीक को अपनाकर बालको अपनी स्मेल्टिंग क्षमताओं को लगातार आधुनिक बना रहा है।



इस क्यूआर कोड को स्कैन करें
और अपनी प्रतिक्रिया, कहानी, कविता, लेख या कोई भी रचनात्मक रचना संपादकीय टीम के साथ साझा करें।



सुडोकू : सोचिए, और सुलझाइए!

						6	8	
				7	3			9
3			9				4	5
4	9							
8			3		5		9	2
							3	6
9	6					3		8
7				6	8			
		2	8					

सुडोकू कैसे खेलें?

लक्ष्य पूरी ग्रीड को 1 से 9 तक की संख्याओं से भरें।

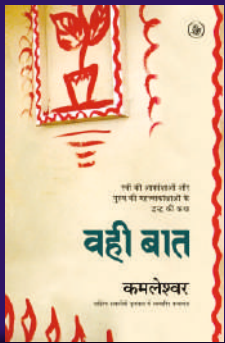
नियम

- हर पंक्ति में 1 से 9 तक की संख्याएँ केवल एक बार आएँ।
- हर कॉलम में 1 से 9 तक की संख्याएँ केवल एक बार आएँ।
- हर 3×3 बॉक्स में भी 1 से 9 तक की संख्याएँ केवल एक बार आएँ।
- दी गई संख्याएँ संकेत हैं, उन्हें बदलना नहीं है।
- हर संख्या पंक्ति, कॉलम और 3×3 बॉक्स में केवल एक बार ही आए।

उत्तर देखें

4	9	1	7	8	6	8	7	9
7	6	9	2	8	9	1	8	4
8	7	8	9	1	4	7	9	6
9	8	7	8	6	1	4	9	2
2	4	6	9	9	7	8	1	8
1	9	8	4	2	8	9	6	7
9	7	4	1	9	2	6	8	8
6	1	2	8	4	8	9	7	9
8	8	9	6	7	9	2	4	1

इस माह की पुस्तक



वही बात

कमलेश्वर

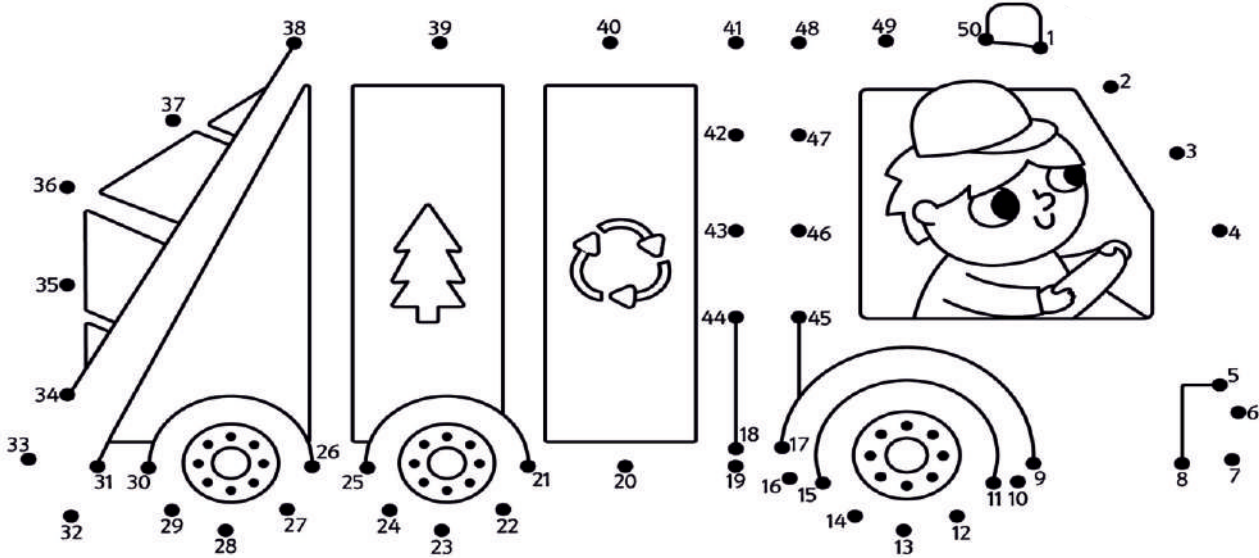


यहाँ स्कैन करें
किताब खरीदने
के लिए

क्या होता है, जब एक रिश्ते में पति के सपने और महत्वाकांक्षाएँ तो आगे बढ़ते जाते हैं, लेकिन पत्नी की भावनाएँ और इच्छाएँ पीछे छूट जाती हैं? कमलेश्वर का चर्चित उपन्यास 'वही बात' पति-पत्नी के रिश्तों, भावनात्मक उपेक्षा और आत्मसम्मान की एक संवेदनशील कहानी है। कहानी में पति की महत्वाकांक्षाओं और उसके तबादले के बीच पत्नी का अकेलापन बढ़ता जाता है। रिश्ते में भावनात्मक दूरी उसे अपने जीवन के बारे में नए सिरे से सोचने पर मजबूर करती है। अंततः वह तलाक लेकर दूसरा विवाह करने का साहसिक निर्णय लेती है और अपने लिए एक नई शुरुआत चुनती है।

उपन्यास की खासियत यह है कि यह स्त्री के फैसले को केवल सामाजिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि उसकी भावनाओं, ज़रूरतों और स्वतंत्रता के नजरिए से देखने का अवसर देता है। यह सवाल भी उठाता है कि क्या विवाह केवल सामाजिक जिम्मेदारी है, या उसमें आपसी समझ, सम्मान और भावनात्मक जुड़ाव भी उतना ही ज़रूरी है? 'वही बात' केवल एक टूटते रिश्ते की कहानी नहीं, बल्कि अपने जीवन के फैसले खुद लेने और रिश्तों में अपनी पहचान बनाए रखने की कहानी है। यह पाठक को सोचने पर मजबूर करता है कि क्या किसी रिश्ते को निभाने के लिए अपनी खुशियों और इच्छाओं का त्याग करना ज़रूरी है, या कभी-कभी खुद को चुनना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है?

सभी बिंदुओं को जोड़कर चित्र पूरा करें।



मिलिए, बालको के शुभंकर **गुबलू जी** से एपिसोड 3 | 'दिवाली का त्योहार!'



डिस्कलेमर: यह पत्रिका बालको के कंपनी संवाद विभाग द्वारा प्रकाशित एक आंतरिक प्रकाशन है। इसमें प्रकाशित सभी सामग्री केवल जानकारी के उद्देश्य से है और इसका स्वामित्व बालको के पास सुरक्षित है। इस पत्रिका की किसी भी सामग्री का पुनर्प्रकाशन, वितरण या बाहरी उपयोग बालको प्रबंधन अथवा संपादक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।